पाठ - 27 : आखिरी चट्टान

सारांश

यह मोहन राकेश का यात्रा-वृत्तांत है जिसमें बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर के मिलन-स्थल पर स्थित कन्याकुमारी के आस-पास के दृश्यों का चित्रात्मक वर्णन किया गया है। कन्याकुमारी के समीप समुद्र में स्थित विवेकानंद चट्टान बड़ी भव्य है। बंगाल की खाड़ी, हिन्द महासागर और अरब सागर के संगम-स्थल पर सागर का असीम विस्तार है। अरब सागर के तट पर स्थित सैंडहिल से हजारों लोग पश्चिमी क्षितिज में सूर्यास्त का मनमोहक दृश्य देखते हैं। सूर्यास्त के समय सागर-तट की रेत और सागर-जल अनेक रंग-रूप बदलता है। लेखक को पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में सूर्यास्त देखने की इच्छा थी, इस कारण उसे रेत में चलने और चट्टानों पर चढ़ने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ा। अंततः लेखक अपने प्रयत्न की सार्थकता पर संतुष्ट हुआ।सागर-तट से अपने होटल में लौटते समय लेखक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। रात में समुद्र में सिर्फ़ काली छायाओं की लकीरें मात्र दिखाई देती हैं। कन्याकुमारी में सूर्योदय का दृश्य भी बड़ा आकर्षक होता है।

तत्वों के आधार पर समीक्षा :-

- **निजता** : यात्रा-साहित्य में लेखक अपने अनुभवों का वर्णन करता है, दूसरों के अनुभवों का नहीं। यहाँ हम लेखक के निजी जीवन के बारे में अनेक महत्त्वपूर्ण बातों को जान जाते हैं। लेखक यात्रा के दौरान प्राकृतिक दृश्यों में स्वयं को पूरी तरह समा लेता है, वह चेतनाहीन-सा उन्हें देखता रहता है। साथ ही,निजता के अंतर्गत आत्मीयता का भाव भी अभिव्यक्त हुआ है।
- **स्थानीयता** : यात्रा-वर्णन के लिए लेखक एक स्थान-विशेष को अपना विषय चुनता है। मोहन राकेश ने 'आखिरी चट्टान' में कन्याकुमारी के मंदिर, पच्छिमी तट रेखा पर स्थित सैंडहिल, सैंडहिल के पीछे पश्चिमी क्षितिज, सागर-तट के नारियलों के झुरमुट, अनेक रंगों की रेत, उफनती-मचलती हुई सागर-लहरों का अत्यंत, मोहक वर्णन किया है।
- **तथ्यात्मकता** : यात्रा-वृत्तांत में लेखक जिस स्थान, व्यक्ति या अन्य वस्तुओं का वर्णन करता है, पाठकों को उनके बारे में तथ्यात्मक जानकारी भी देता चलता है। इस पाठ में लेखक ने वर्णन करते हुए लिखा है , 'हिन्द महासागर की ऊँची-ऊँची लहरें मेरे आस-पास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थीं। बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थी।'
- **चित्रात्मक सरल भाषा** : इसकी भाषा चित्रात्मक, सरल और आम बोलचाल की भाषा है। उर्दू , अंग्रेज़ी, आदि के शब्दों का समावेश हुआ है परंतु ये शब्द पाठक के सामान्य ज्ञान के हैं। इनके प्रयोग से अर्थ-ग्रहण में बाधा उत्पन्न नहीं होती । शैली में वर्णनात्मकता है। वर्णन में बिंबात्मकता सहज रूप से आ गई है। लेखक ने सभी प्रसंगों, दृश्यों, स्थानों तथा अनुभवों का वर्णन इस कुशलता से किया है कि पाठक की रुचि बढ़ती जाती है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

- लेखक ने आखिरी चट्टान किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।
- पश्चिमी क्षितिज में अस्त होते हुए सूर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
- यात्रा-साहित्य के तत्त्वों के आधार पर 'आखिरी चट्टान' की समीक्षा कीजिए।